Impact Factor (SJIF): 6.126 E-ISSN: 2583-1615, P-ISSN: 3049-3498

International Journal of Research in Academic World

Received: 13/May/2025 **IJRAW:** 2025; 4(6):212-214 **Accepted:** 26/June/2025

महिलाओ के आर्थिक सशक्तिकरण में स्व सहायता समूह के योगदान का अध्ययनः छत्तीसगढ़ राज्य के सूरजपुर जिले के विशेष सन्दर्भ में

***[1]डॉ. रवींद्र नाथ शर्मा' और [2]कंचन जायसवाल**

*[1]विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र व समाजकार्य विभाग, श्री साई बाबा आदर्श महाविद्यालय, अम्बिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ, भारत।

[2]शोधार्थी, संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय, अम्बिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ, भारत।

सारांश

स्व सहायता समूह ने गरीब महिलाओं के जीवन में आर्थिक व सामाजिक बदलाव लाया है। स्व सहायता समूह से जुड़े सदस्यों की एक समान परिस्थितियाँ होती है। समूह के माध्यम से सभी सदस्य बचत करना प्रारंभ करना करता है और इन्हीं बचत को बैंक के माध्यम से ऋण के रूप में लेकर एक–दूसरे की मदद करती है स्व सहायता समूह ने केवल गरीब महिलाओं के जीवन में परिवर्तन किया साथ ही महिलाओं में आत्मनिर्भरता की भावना जागृत हुआ है। वर्तमान में महिलाएं आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक रूप से सशक्त होकर, जीवन के हर एक क्षेत्र में अपना व्यक्तित्व का विकास कर सशक्त हो रही है। स्व सहायता समूह (SHG) महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक विकास का एक सशक्त माध्यम बन चुके हैं। ये समूह आमतौर पर 10–20 महिलाओं का एक समूह होता है, जो स्वयं–सहायता, आपसी सहयोग, बचत और ऋण की सुविधा के आधार पर कार्य करता है। SHG का उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना और उन्हें निर्णय लेने की प्रक्रिया में सशक्त बनाना है। स्व सहायता समूह महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण का एक प्रभावी माध्यम हैं। इनके माध्यम से महिलाएँ न केवल आत्मनिर्भर बन रही हैं बल्कि समाज में बदलाव की वाहक भी बन रही हैं। यदि उन्हें उचित मार्गदर्शन, संसाधन और अवसर दिए जाएँ, तो SHG एक क्रांति का रूप ले सकता है। प्रस्तुत शोध पत्र में महिलाओं के सामाजिक आर्थिक सशक्तिकरण में स्वसहायता समूह के योगदान पर विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्दः महिलाओं में आत्मनिर्भरता, सशक्त, व्यक्तित्व का विकास।

प्रस्तावना

भारतीय अर्थव्यवस्था मूलतरू ग्रामीण और कृषि प्रधान है। भारत की लगभग 72.5 प्रतिशत लोग ग्रामीण क्षेत्रों में रहते हैं वे मुख्य व्यवसाय के रूप में कृषि करते हैं। कृषि मूलतः ग्रामीण अर्थव्यवस्था को ऊपर नहीं उठा सकता जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्र में अधिक निर्धनता देखने को मिलती है। भारत सरकार द्वारा इस निर्धनता को दूर करने के लिए अनेक प्रयास किए जाते हैं इन प्रयासों में से एक शासकीय योजनाओं में SHG आता है SHG जिसे स्व सहायता समूह भी कहा जाता है। स्व सहायता समूह एक ऐसा समूह है जो एक अनौपचारिक समूह है इसके अंतर्गत ऐसे लोग आते हैं जो अपने सामाजिक आर्थिक स्थिति को वर्तमान से बेहतर बनाने के लिए एक साथ आकर उक्त एक समूह का निर्माण करते हैं जिसके माध्यम से यह समूह आपस में बचत कर एक दूसरे की मदद करते हैं तथा बैंकों से ऋण लेकर अपना रोजगार चलते हैं। समूह के लोगों को शासन द्वारा प्रशिक्षण भी दिया जाता है जिसे महिलाएं प्रशिक्षित होकर अधिक से अधिक धन कमा सके और आर्थिक रूप से महिलाओं में आत्मनिर्भरता भी आ जाए। वर्तमान परिवेश में महिलाएं स्व सहायता समूह के माध्यम से स्वरोजगार के अवसर प्रदान कर रही हैं जो उन्हें अपने व्यक्तित्व का विकास करने के में सहायता कर रहा है जिसके कारण महिलाएं पुरुषों के समान सामाजिक आर्थिक रूप से सभी जगहों पर बराबर का योगदान दे रहीं हैं।

स्व सहायता समूह के महिलाओं को अपना एवं अपने

***Corresponding Author:** डॉ. रवींद्र नाथ शर्मा'

परिवार का विकास करने में सहायक सिद्ध हुआ है। महिलाएं लघु एवं कुटीर उद्योग व अन्य कार्यों से सशक्त हो कर अपने घर की अर्थ व्यवस्था को सुधार कर रही है। स्व सहायता समूह की अवधारणा भारत के साथ–साथ संपूर्ण विश्व में प्रयोग किया जा रहा है स्व सहायता समूह अर्थात खुद की मदद करना स्व सहायता समूह जिसमें 10 से 15 या 2 या 2 से अधिक व्यक्ति एक–दूसरे के हित को लेकर आपस में एक समूह बनते हैं स्व सहायता समूह के महिलाएं के व्यक्तित्व के बदलाव के साथ–साथ बैंक गतिविधियों से भी अवगत कराता है जो महिलाएं पहले कभी बैंक नहीं गई जिनका खाता नहीं खोला था खुला था वे महिलाएं आज स्व सहायता समूह से जुड़कर बैंक ने अपना खाता भी खुलवा रही है साथ ही साथ बचत भी कर रही है और अपना विकास कर रही जब महिलाएं अपने विकास के लिए किसी सरकारी संगठन की सहायता लेती है जिसमें शासन के द्वारा स्व सहायता समूह की महिलाओं को लाखों रूपये का ऋण मिल जाता है जिसे वे अपना खुद का कोई व्यवसाय कर सके तो वह स्व सहायता समूह कहा जाता है जिसमे महिलाओं का एक समूह होना आवश्यक है।

स्वयं सहायता समूह का मुख्य उद्देश्य– गरीब ग्रामीण महिलाओं को ऋण देकर आर्थिक रूप से सशक्त करता है। स्वंय सहायता समूह का गठन मूलतः आर्थिक आवश्यक्ता है, यह समूह महिलाओं को जनजाति महिलाओं को बैंक गतिविधियों के साथ–साथ बचत करना सिखाता है, बचत का सही तरीके से उपयोग करना स्वंय सहायता समूह के माध्यम से होता है, समूह के कारण महिलाओं में आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता व सामाजिक समानता को बढ़ावा मिला है, समूह की महिलायें व्यक्तिगत रूप से सशक्त होने के साथ–साथ सामूहिक व सामाजिक स्तर में भी सशक्त हो रही है, इसी सशक्तिकरण के कारण आज की महिलायें पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही, तथा अपने अधिकार के लिये आवाज उठा पा रही है। वर्तमान के परिदृष्य में स्वंय सहायता समूह में जनजाति महिलाओं को प्रशिक्षण के माध्यम से नये–नये कार्यों को करने के लिये प्रेरित कर रही है, महिलाओं द्वारा प्रशिक्षण उपरांत कार्य करने पर कामो में सफाई व गुणवत्ता बढाने से उनके बनाये हुये वस्तुओं का मोल बढ़ गया है, जिसे महिलायें स्वंय बाजार में जाकर बेच रही है जिससे उनके अंदर समाज में खड़े होने का हौसला औपजायी हो रहा है, आज के आधुनिक दौर में जनजातीय महिलायें भी अपनी महत्वपूर्ण व्यक्तित्व का विकास कर सामाज में अपना स्थान सुनिश्चित कर रही है, स्वंय सहायता समूह ने महिलाओं के व्यक्तित्व निर्माण में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। वर्तमान में जनजातीय महिलाओं में स्वंय सहायता समूह की विशिष्टता एवं महत्वता को देखते हुये शोधार्थी द्वारा इसका चयन शोध कार्य हेतु किया गया है।

साहित्य समीक्षा

प्रस्तावित शोध कार्य के सन्दर्भ में कई विद्वानों ने समय–समय पर उल्लेखनीय कार्य किये हैं जो निम्नलिखित हैं अनीता (2020) में अपने अध्ययन में पाया कि स्वंय सहायता समूह ने–महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में बदलाव लाया साथ ही ग्रामीण क्षेत्रो में शिक्षा की कमी के कारण महिलाओं में बहुत सारी जानकारी का अभाव था, जिसे महिला समूह द्वारा होने वाले लाभ से वंचित हो गये थे। दास, अनुप (2003) ने अपने अध्ययन के आधार पर बताया कि एच. एच.जी. निर्धनता निवारण व महिलाओं के विकास के सशक्त माध्यम है, जिसके द्वारा महिलाओं की सामजिक, राजनीतिक क्षमता में विकास होता है तथा निर्धनो के विकास में यह जरूरी भूमिका है। देवपुरा, प्रतापमल (2003) ने अपने अध्ययन के आधार पर बताया कि स्वंय सहायता समूह रोजगार बढ़ाने में अहम् भूमिका निभाता है, लोग आपस में मिलकर स्वंय सहायता समूह का निर्माण करते है, पंचायतें इस दिशा में पहल करे, लोगों को एकत्रित कर स्वंय सहायता समूह निर्माण की योजनाओं व उसके फायदो से अवगत कराये। गौतम कल्पना (2022) में पंचायती राज अधिनियम के प्रभाव से महिलाओं में शैक्षणिक जागरूकता संबंधी अध्ययन पर निष्कर्ष दिया कि पंचायती राज अधिनियम के प्रभाव से महिलाओं में शिक्षा के प्रति जागरूकता आये, जिससे महिलाये आगे बढने लगी तथा अपने साथ हो रहे भेद–भाव व उँच–नीच की भावना का विरोध कर समाज में अपना अलग व्यक्तित्व उजागर कर रही है। गजपाल, तारेश्वरी (2016) ने शोध अध्यन उपरांत/दौरान एक निष्कर्ष पर पहुंची की स्वंय सहायता समूह ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण के साथ–साथ राजनितिक रूप से भी सशक्त हुई है। निशा (2016) 13 ने अपने अध्ययन के आधार पर कहा कि स्वंय सहायता समूह की गठन से जनजातीय महिलायें आर्थिक रूप से स्ववलंबन और सामाजिक सुधार के लिये एकत्रित हुये लोगो का स्वैच्छिक संगठन है यह एक अनौपचारिक संगठन है जिससे लोगो में आपसी विश्वास व सहयोग पर काम करने की भावना उत्कृष्ट होती है, स्वंय सहायता समूह गरीबी से लड़ने के लिये आर्थिक व सामाजिक क्षेत्र की एक नई विचारधारा है। पराशर कविता (2022) 16 ने कहा कि स्वंय सहायता समूह परंपरागत ग्रामीण व लघु उद्योगो को बनाये रखने में सहायता करता है साथ ही गरीबी उन्मूलन व आजीविका सुनिश्चित करता है।

उद्देश्य

प्रस्तावित शोध कार्य के निम्नलिखित उद्देश्य हैः–

1. महिलाओं मे स्व सहायता समूह से जुडने के कारणों एवं उनके रूझान तथा जागरुकता के कारणो का अध्ययन करना
2. स्व सहायता समूह के कारण महिलाओं के जीवन मे आए बदलाओं का अध्ययन करना
3. स्व सहायता समूह के संबंध मे सकारात्मक सुझावो को प्रस्तुत करना
4. स्व सहायता समूह के कारण महिलाओं मे आए

समाजिक आर्थिक परिवर्तन का अध्ययन करना

अनुसंधान प्रविधि

यह अध्ययन सूरजपुर के तीन गांव क्रमशः पचीरा, नयनपुर, बसकर के अध्ययन क्षेत्र पर आधारित है वर्तमान में पाया गया है कि इन तीनों ही गांव में महिलाएं स्व सहायता समूह में कार्यरत हैं जो कि सुरजपुर रामानुजनगर ब्लॉक से संचालित होकर सूरजपुर ग्रामीण बैंक मे वित्त प्राप्त करते हैं जिसके इन स्व सहायता समूहों की महिलाओं द्वारा कचरा संग्रहकर्ता दृ फुलो से रंग (औरगेनिक कलर) बनाने वाली महिलाए, कास्ट कला (हैंड लूम) आदि को व्यवसाय के रूप में अपना अपनाया है जिसके तहत स्व सहायता समूह से जुडी महिलाए अपने आय के साधन को सृजित कर रहीं है। अतः इन समुहो को अपने अध्ययन के लिए "सैम्पल" के रूप में चुना एवं साक्षात्कार व अवलोकन प्रविधि द्वारा तथ्यों को संकलित किया गया। प्रस्तुत शोध पत्र मे साक्षत्कार अनुसुची और व्यक्तिक अध्ययन प्रविधि का अपयोग किया जाएगा, अध्ययन के लिए अध्ययन क्षेत्र से समंक के रूप मे तीन सौ उत्तर दाताओं का चयन दैव निदर्शन पद्धति से किया गया है।

निष्कर्ष

महिलाओं की अर्थव्यवस्था आज भी है ऐसे में पूरे देश में स्वयं सहायता समूह महिलाओं की अर्थव्यवस्था में सुधार की एक कड़ी बनी है। लेकिन फिर आज बहुत सी महिलाएं इस योजना की सही जानकारी न होने के कारण मिलने वाले लाभसे अछूते हैं। छत्तीसगढ़ राज्य की लगभग एक तिहाई महिला जनसंख्या है, सरकार द्वारा महिलाओं के उत्थान के लिए बहुत से प्रयास किये जा रहे हैं उन्हीं में से एक स्वयं सहायता समूह है। जिसके उपयोग से महिलाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है, साथ ही समाज में महिलाओं को समानता का अधिकार भी मिल रहा है। महिलाएं अब घर की चार दिवारो से निकल कर घर के बाहर अपना स्वयं का व्यापार चला रही हैं शिक्षा के लिए महिलाओं की भागीदारी बढ़ रही है। आज सरकार के द्वारा दिये गये ऋण से महिलाओं में बिचौलियों के चंगुल से बचा पाने में यह योजना कारगर साबित हो रही है। प्रस्तावित शोध अध्ययन के प्राप्त परिणामों से महिला समाज में महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण को और भी सशक्त करने में महत्वता मिलेगी। महिलाओं मे आर्थिक निर्भरता लाने मे स्व सहायता समूह एक एहम कडी है जिसके माध्यम से महिलाए ना केवल आर्थिक बचत कर रही हैं बचत के साथ साथ अपनी जरूरतों को स्वं पूरा कर रही हैं आज का वर्तमान परिवेश मे महिलाएं ना केवल वृपरिवार के साथ बैठ कर आपसी चर्चा विचार विमर्श कर रही है बल्की समस्याओं का समाधान कर रही है आज महिलाओं के साथ परिवार व समाज मे अपमानजनक व्यवहार बंद हुआ है बल्की महिलाओं को आज पूरूषो क समान वे सारे अधिकार दिए गए है जो उन्हे पहले ही मिल जाना चाहिए था मे स्व सहायता समूह ने महिलाओ को सश्क्त करने मे अधिक ध्यान दिया है जिससे महिलाए सभी तरीको से सशक्त हो रही है। SHG से जुड़ी अधिकांश महिलाएँ पहले आर्थिक रूप से निर्भर थीं, लेकिन समूह में शामिल होने के बाद वे खुद कमाई करने लगी हैं। उन्होंने छोटे व्यवसाय जैसे दृ सब्जी बेचने, अगरबत्ती निर्माण, सिलाई–बुनाई, मुर्गी पालन आदि कार्यों में सफलता पाई है। SHG से जुड़ने के बाद महिलाओं में नियमित बचत की आदत विकसित हुई है। साथ ही वे बैंकिंग सेवाओं, ऋण व्यवस्था और वित्तीय योजनाओं को बेहतर समझने लगी हैं। SHG की बैठकों और सामूहिक निर्णयों में भाग लेने से महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ा है। अब वे पारिवारिक और सामाजिक मुद्दों पर खुलकर बोलने लगी हैं। कई महिलाओं ने पंचायत स्तर पर नेतृत्व भी संभाला है। सूरजपुर जिले में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM) और DAY & NRLM जैसी योजनाओं के माध्यम से SHG को प्रोत्साहन मिला है। बैंक ऋण, प्रशिक्षण कार्यक्रम, और विपणन सहायता से महिलाएँ अपने व्यवसाय को आगे बढ़ा पाई हैं। सूरजपुर जिले में स्व सहायता समूह महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक और मानसिक सशक्तिकरण का सशक्त माध्यम बन चुके हैं। वे अब केवल गृहिणी नहीं, बल्कि उद्यमी, बचतकर्ता और निर्णयकर्ता भी हैं। SHG के प्रभाव ने न केवल महिलाओं का जीवन बदला है, बल्कि उनके परिवार और समुदाय को भी समृद्ध किया है। यदि उन्हें निरंतर समर्थन, प्रशिक्षण और बाजार से जोड़ने की व्यवस्था की जाए, तो वे स्थानीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ बन सकती हैं।

References

1. Christabell PJ. 'Women Empowerment through Capacity Building the Role of Microfinance', Concept Publishing Company, New Delhi, 2009.
2. Dandikar, Hemalata. Indian Women's Development: Four Lenses. South Asia Bulletin. 1986; VI(1):2-10. Delhi.
3. Dr. Dasarati Bhuyan. "Empowerment of Indian Women: A challenge of 21st Century" Orissa Review, 2006.
4. Handy F & Kassam M. Women's empowerment in rural India. Paper presented at the ISTR conference, Toronto Canada, 2004.
5. Harriet B. Presser, Gita Sen. 'Women's Empowerment and Demographic Processes', Oxford University Press, New York, 2003.
6. Kabeer N. Targeting women or transforming institutions? Policy lessons from NGO antipoverty efforts. Development in practice. 1995; 5(2):108-116.
7. Kabeer N. Gender Equality and Women's Empowerment: A Critical Analysis of the third Millenium Development Goal. Gender and Development. 2005; 13(1):13-24.
8. Kabeer, Naila. Reversed Realities: Gender Hierarchies in Development Thought. London, Verso, 2003, Pp-69-79, 130-136.
9. Kachika T. Women's Land Rights in Southern Africa: Consolidated Baseline Findings from Malawi, Mozambique, South Africa, Zambia and ZImbabwe. London: Niza and Actiona AID International, 2009.